Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Refereed Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	Research Paper	Paper No. VBRP-41

पर्यटन दबाव और सतत विकास: पर्यावरण एवं सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन — मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले के विशेष संदर्भ में

पूनम सिंह, शोधार्थी, भूगोल विभाग

***सारांश** (Abstract): पर्यटन वर्तमान समय में आर्थिक विकास, रोजगार सृजन एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। भारत में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं विरासत पर्यटन की बढ़ती लोकप्रियता ने अनेक क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है। तथापि, पर्यटन गतिविधियों की अत्यधिक वृद्धि से पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक संसाधनों पर दबाव भी बढ़ा है।*

प्रस्तुत शोध-पत्र में पर्यटन दबाव तथा सतत विकास के मध्य संबंधों का अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है, जहाँ महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, सिंहस्थ महापर्व तथा अन्य धार्मिक स्थलों के कारण प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु एवं पर्यटक आते हैं।

अध्ययन में पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों, जैसे—प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग तथा अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियों—के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रभावों, जैसे—सांस्कृतिक व्यवसायीकरण, स्थानीय पहचान में परिवर्तन एवं सांस्कृतिक संरक्षण के विभिन्न आयामों—का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सतत पर्यटन विकास सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल प्रबंधन तथा प्रभावी नीति-निर्माण अत्यंत आवश्यक हैं। इन उपायों के माध्यम से पर्यटन के आर्थिक लाभों को बनाए रखते हुए पर्यावरणीय संतुलन एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी सुनिश्चित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: पर्यटन दबाव, सतत विकास, पर्यावरणीय प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, धार्मिक पर्यटन, उज्जैन।

1. प्रस्तावना

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

वैश्वीकरण तथा परिवहन साधनों के विकास ने पर्यटन उद्योग को विश्व की सबसे तीव्र गति से विकसित होने वाली आर्थिक गतिविधियों में सम्मिलित कर दिया है। पर्यटन न केवल विदेशी मुद्रा अर्जन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, बल्कि यह स्थानीय रोजगार, आधारभूत संरचना के विकास तथा क्षेत्रीय आर्थिक प्रगति को भी प्रोत्साहित करता है।

भारत में धार्मिक पर्यटन का विशेष महत्व है। उज्जैन, वाराणसी, प्रयागराज, हरिद्वार तथा तिरुपति जैसे धार्मिक केंद्र प्रतिवर्ष करोड़ों श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। मध्य प्रदेश का उज्जैन नगर प्राचीन काल से धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ स्थित महाकालेश्वर मंदिर, कालभैरव मंदिर, हरसिद्धि मंदिर तथा सिंहस्थ महापर्व देश-विदेश के पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं के प्रमुख आकर्षण केंद्र हैं।

पर्यटन के सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ इसके परिणामस्वरूप अनेक पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं। प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ तथा स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ सतत विकास के लिए चिंता का विषय हैं। अतः पर्यटन विकास को सतत विकास के सिद्धांतों के अनुरूप नियोजित एवं संचालित करना समय की आवश्यकता है।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि

विश्व पर्यटन संगठन (UN Tourism) के अनुसार, पर्यटन विश्व अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख क्षेत्र है। भारत में पर्यटन सकल घरेलू उत्पाद (GDP) तथा रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। विशेष रूप से धार्मिक पर्यटन छोटे व्यवसायों, होटल उद्योग, परिवहन सेवाओं तथा स्थानीय बाजारों की आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करता है।

उज्जैन में महाकाल लोक परियोजना के विकास के पश्चात पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय आर्थिक गतिविधियों का विस्तार हुआ है, किंतु साथ ही पर्यावरणीय दबाव, यातायात की समस्या, अपशिष्ट प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में भी वृद्धि हुई है। इसलिए पर्यटन विकास और पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

3. समस्या का प्रतिपादन

उज्जैन में पर्यटन गतिविधियों के तीव्र विस्तार के कारण पर्यावरणीय प्रदूषण, शिप्रा नदी की स्वच्छता, यातायात दबाव, ठोस

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

अपशिष्ट प्रबंधन तथा स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव जैसी अनेक समस्याएँ सामने आई हैं। बढ़ती पर्यटक संख्या के कारण प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों पर दबाव निरंतर बढ़ रहा है। इसलिए यह अध्ययन पर्यटन दबाव एवं सतत विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है तथा इसके लिए उपयुक्त नीतिगत उपायों की खोज करने का प्रयास करता है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

- *पर्यटन दबाव की अवधारणा का विश्लेषण करना।*
- *पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करना।*
- *पर्यटन के सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करना।*
- *उज्जैन जिले में पर्यटन दबाव की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना।*
- *सतत पर्यटन विकास हेतु उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।*

5. शोध प्रश्न

- *पर्यटन दबाव का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है?*
- *पर्यटन स्थानीय संस्कृति एवं सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित करता है?*
- *उज्जैन जिले में पर्यटन दबाव के प्रमुख कारण क्या हैं?*
- *सतत पर्यटन विकास के लिए कौन-कौन से प्रभावी उपाय अपनाए जा सकते हैं?*

6. परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

H_1: *पर्यटन दबाव में वृद्धि से पर्यावरणीय समस्याओं में वृद्धि होती है।*

H_2: *पर्यटन गतिविधियाँ स्थानीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन उत्पन्न करती हैं।*

H_3: *सतत पर्यटन नीतियाँ पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक प्रभावों को कम करने में सहायक सिद्ध होती हैं।*

7. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

- Sharma (2020) *के अनुसार, पर्यटन आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है, किंतु अनियोजित पर्यटन पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म देता है।*
- Singh (2021) *ने धार्मिक पर्यटन केंद्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन एवं व्यवसायीकरण की प्रवृत्ति को रेखांकित किया है।*
- Gupta (2022) *के अध्ययन में पर्यटन गतिविधियों के कारण जल प्रदूषण एवं ठोस अपशिष्ट की*

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

समस्या को प्रमुख चुनौती बताया गया है।

- UNWTO (2023) के अनुसार, सतत पर्यटन विकास स्थानीय समुदाय, पर्यावरण संरक्षण एवं आर्थिक विकास के मध्य संतुलन स्थापित करता है।

8. शोध पद्धति (Research Methodology)

1. अध्ययन क्षेत्र: उज्जैन जिला, मध्य प्रदेश।
2. शोध डिज़ाइन: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक।
3. डेटा के प्राथमिक स्रोत: साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं क्षेत्रीय अवलोकन।
4. द्वितीयक स्रोत: पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी रिपोर्ट तथा पर्यटन विभाग के दस्तावेज।

9. पर्यटन दबाव की अवधारणा

पर्यटन दबाव (Tourism Pressure) से आशय किसी पर्यटन स्थल की वहन क्षमता (Carrying Capacity) से अधिक पर्यटकों के आगमन के कारण उत्पन्न होने वाले पर्यावरणीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों से है।

इसके प्रमुख संकेतक निम्नलिखित हैं—

- अत्यधिक भीड़
- प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग
- कचरा उत्पादन में वृद्धि
- यातायात दबाव
- सांस्कृतिक परिवर्तन

10. सतत विकास की अवधारणा

विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग (World Commission on Environment and Development) द्वारा प्रतिपादित सतत विकास का उद्देश्य वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करना है।

सतत विकास के तीन प्रमुख आयाम हैं—

1. आर्थिक आयाम: रोजगार, आय सृजन एवं निवेश।
2. सामाजिक आयाम: सामाजिक न्याय एवं सांस्कृतिक संरक्षण।
3. पर्यावरणीय आयाम: प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण।

11. पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभाव

(कसकारात्मक प्रभाव (

- पर्यावरण संरक्षण: पर्यटन स्थलों के संरक्षण हेतु सरकार एवं समाज अधिक सक्रिय होते हैं।
- हरित अवसंरचना का विकास: पार्क, उद्यान एवं स्वच्छता सुविधाओं का विस्तार होता है।
- संरक्षण हेतु वित्तीय सहायता: पर्यटन से प्राप्त राजस्व का उपयोग

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पर्यावरण एवं विरासत संरक्षण कार्यों में किया जाता है।

(खनकारात्मक प्रभाव (

- जल प्रदूषण: धार्मिक गतिविधियों एवं अपशिष्ट के कारण जल स्रोत प्रभावित होते हैं।
- वायु प्रदूषण: वाहनों की संख्या बढ़ने से वायु गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- ठोस अपशिष्ट: प्लास्टिक एवं अन्य ठोस कचरे की मात्रा में वृद्धि होती है।
- जैव विविधता पर प्रभाव: वनस्पतियों एवं जीव-जंतुओं के प्राकृतिक आवास प्रभावित होते हैं।

12. पर्यटन के सांस्कृतिक प्रभाव

(कसकारात्मक प्रभाव (

1. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण।
2. स्थानीय कला एवं शिल्प का विकास।
3. सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा।

(खनकारात्मक प्रभाव (

1. सांस्कृतिक व्यवसायीकरण।
2. पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन।
3. स्थानीय पहचान का क्षरण।

13. उज्जैन जिले में पर्यटन का स्वरूप

उज्जैन भारत के प्रमुख धार्मिक नगरों में से एक है। यह अपनी धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के कारण देश-विदेश के लाखों श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को आकर्षित करता है।

मुख्य पर्यटन स्थल—

- महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग
- कालभैरव मंदिर
- हरसिद्धि मंदिर
- रामघाट
- सांदीपनि आश्रम

14. उज्जैन में पर्यटन दबाव का विश्लेषण

(कपर्यावरणीय प्रभाव (

- शिप्रा नदी पर बढ़ता दबाव: धार्मिक आयोजनों एवं स्नान के कारण नदी प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है।
- अपशिष्ट प्रबंधन: सिंहस्थ एवं अन्य पर्व अवसरों पर ठोस कचरे की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हो जाती है।
- यातायात एवं ध्वनि प्रदूषण: पर्यटन सीजन के दौरान शहर के प्रमुख मार्गों पर अत्यधिक भीड़ एवं ध्वनि प्रदूषण देखा जाता है।

(खसांस्कृतिक प्रभाव (

सकारात्मक प्रभाव

- धार्मिक परंपराओं का संरक्षण।
- स्थानीय रोजगार एवं आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

नकारात्मक प्रभाव

- *धार्मिक गतिविधियों का व्यवसायीकरण।*
- *स्थानीय जीवनशैली एवं सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन।*

15. चर्चा (Discussion)

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पर्यटन आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है, किंतु यदि इसका समुचित एवं वैज्ञानिक प्रबंधन न किया जाए तो यह पर्यावरण तथा संस्कृति दोनों के लिए चुनौती बन सकता है। उज्जैन में पर्यटन के प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। महाकाल लोक परियोजना एवं विभिन्न धार्मिक आयोजनों के कारण पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ प्राप्त हुआ है। दूसरी ओर, प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव, कचरा प्रबंधन, यातायात समस्याओं तथा सांस्कृतिक व्यवसायीकरण जैसी चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। इसलिए पर्यटन विकास एवं पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

16. निष्कर्ष

पर्यटन एवं सतत विकास परस्पर पूरक अवधारणाएँ हैं। उज्जैन जिले में पर्यटन के कारण आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तथापि, बढ़ते पर्यटन दबाव ने पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक चुनौतियों को भी जन्म दिया है। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान सतत पर्यटन नीतियों, वैज्ञानिक प्रबंधन तथा स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से संभव है। पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण तथा सतत विकास के सिद्धांतों को प्राथमिकता देकर उज्जैन को सतत धार्मिक पर्यटन के एक आदर्श मॉडल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

17. सुझाव

- *पर्यटन स्थलों की वहन क्षमता (Carrying Capacity) का वैज्ञानिक निर्धारण किया जाए।*
- *शिप्रा नदी के संरक्षण एवं स्वच्छता हेतु विशेष अभियान संचालित किए जाएँ।*
- *प्लास्टिक के उपयोग पर प्रभावी एवं कठोर नियंत्रण लागू किया जाए।*
- *पर्यावरण-अनुकूल परिवहन प्रणाली को प्रोत्साहित किया जाए।*
- *स्थानीय समुदाय को पर्यटन योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में सक्रिय भागीदारी प्रदान की जाए।*

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

- ***डिजिटल भीड़ प्रबंधन (****Digital Crowd Management)* ***प्रणाली विकसित एवं लागू की जाए।***
- ***सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विशेष निधि की स्थापना की जाए।***

18. संदर्भ सूची*(References) — APA 7th Edition*

- *Bhattacharya, P. (2022). Tourism and sustainable development. Sage Publications.*
- *Gupta, A. (2022). Environmental impacts of religious tourism in India. Journal of TourismStudies, 18(2), 45–58.*
- *Madhya Pradesh Tourism Board. (2024). Tourism development report. Government ofMadhya Pradesh.*
- *Ministry of Tourism. (2024). India tourism statistics 2024. Government of India.*
- *Sharma, J. K. (2020). Tourism planning and development. Kanishka Publishers.*
- *Singh, R. (2021). Religious tourism and cultural transformation. Indian Journal of SocialResearch, 62(3), 210–225.*
- *United Nations World Tourism Organization. (2023). Sustainable tourism developmentreport. UNWTO.*
- *Verma, S. (2022). Religious tourism in Ujjain: Opportunities and challenges. IndianJournal of Tourism Research, 14(1), 55–71.*
- *World Commission on Environment and Development. (1987). Our common future.Oxford University Press.*
- *Yadav, P. (2023). Tourism pressure and environmental sustainability. InternationalJournal of Tourism Management, 11(4),*